eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

लोक कला पर सोशल मीडिया का प्रभाव

पारुल जुरेल[1] , डॉ. नमिता त्यागी[2]
[1]शोध छात्रा, ड्राइंग और पेंटिंग विभाग, कला संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग आगरा
[2]सहायक प्रोफेसर, ड्राइंग और पेंटिंग विभाग, कला संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग आगरा

Received: 05 April 2025, Accepted: 20 April 2025, Published online: 01 May 2025

Abstract

सोशल मीडिया का विकास और इसके प्रभाव ने समाज के विभिन्न पहलुओं विशेष रूप से सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक कला रूपों के क्षेत्र में नाटकीय परिवर्तन किए हैं। सोशल मीडिया ने लोक कला को नए मंच और दर्शक वर्ग प्रदान किया है, जिससे इन पारंपरिक कला रूपों को वैश्विक स्तर पर पहचान और सम्मान मिल रहा है। यह सोशल मीडिया का प्रभाव है, जिसने लोक कलाओं को न केवल संरक्षित किया, बल्कि उनका प्रचार–प्रसार भी किया है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य, लोक कला के संरक्षण, प्रचार और व्यवसायीकरण के संदर्भ में सोशल मीडिया के प्रभाव को समझना है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और टिकटॉक ने पारंपरिक लोक कला के रूपों को नए रूप में प्रस्तुत किया है। इन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से कलाकार अपनी कला को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने में सक्षम हो गए हैं। साथ ही सोशल मीडिया ने लोक कला के व्यवसायीकरण में भी अहम भूमिका निभाई है, जिससे कलाकार अपनी कला से आय अर्जित करने में सफल हो रहे हैं।

इस शोध में विभिन्न केस स्टडी, कलाकारों के साक्षात्कार और सोशल मीडिया के प्रभावों का विश्लेषण किया गया, ताकि यह समझा जा सके कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने लोक कला को किस तरह से एक नए आयाम तक पहुँचाया है। हालांकि, इस शोध में एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सोशल मीडिया ने लोक कला के सांस्कृतिक प्रमाणिकता को प्रभावित भी किया है। व्यवसायीकरण और वैश्विक दर्शक वर्ग तक पहुँचने के दबाव में लोक कलाकारों को अपनी कला को संस्कृति की असली पहचान से समझौता किए बिना प्रस्तुत करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

कुछ समय के लिए सोशल मीडिया ने पारंपरिक कलाओं को "वायरल" बनाने के लिए इसे आधुनिक रुझानों के अनुरूप ढालने की प्रवृत्तियाँ शुरू की हैं, जिससे उसकी मूल सांस्कृतिक पहचान खो सकती है। इस शोध पत्र में यह भी चर्चा की गई है कि कैसे वायरल वीडियो और ऑनलाइन समुदायों ने लोक कला के नए रूप को आकार देने में मदद की है और कैसे यह कलाकारों के लिए प्रचार और वित्तीय सहायता का एक स्रोत बन चुका है। इसके अतिरिक्त, शोध विश्लेषण करता है कि कैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने लोक कलाकारों के लिए दर्शकों से जुड़ने, अपनी कला को बढ़ावा देने और वैश्विक सांस्कृतिक बातचीत में भाग लेने के नए तरीके पेश किए गये हैं।

बीज शब्द – सोशल मीडिया, लोक कला, सांस्कृतिक प्रमाणिकता

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

Introduction

लोक कला वह पारंपरिक कला रूप है, जो समाज की सांस्कृतिक धारा और उसकी पहचान को व्यक्त करता है, जिनमें लोक संगीत, नृत्य, चित्रकला, शिल्प, हस्तशिल्प, काव्य, लोक नाटक और विभिन्न प्रकार की कथाएँ सम्मिलित होती हैं। यह कला रूप एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सामाजिक सुदृढ़ता का एक अहम संबंध को एक साथ जोड़े रखने का माध्यम हैं। लोक कला आज महज एक परम्परा ही नहीं अपितु एक विशेष देश की पहचान भी बन गई है. परन्तु लोक कला का विकास क्षेत्रीय परंपराओं, लोक विश्वासों रीति–रिवाजों सांस्कृतिक परम्पराओं आदि जन समूह के द्वारा हुआ है. जो आज सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्रों से जुड़े समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को दर्शाती है। अर्थात प्रत्येक देश की लोक कला वहां के रहने वाले समुदाय व जनजातियों की संस्कृतियों, सामाजिक संरचना, धार्मिक मान्यताओं और ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, भारत में विभिन्न राज्यों की लोक कला अलग–अलग प्रकार की होती है, जैसे कि राजस्थान की लघु चित्र कला, कठपुतली नृत्य, उत्तर प्रदेश की चौकपूर्ण, नौटंकी, पंजाब का भांगड़ा, और गुजरात की कलोटी, महाराष्ट्र की वर्ली आदि। यह कला न केवल मनोरंजन का साधन होती है, बल्कि यह एक समाज की संस्कृति, मान्यताओं, और परंपराओं को जीवित रखने का माध्यम भी है।

यह कला रूप न केवल पारंपरिक काव्य, संगीत और नृत्य के रूप में होती हैं, बल्कि इनका उद्देश्य लोगों में एकता व सामूहिकता की भावना विकास करना है। अपितु आज लोक कलाएं सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ियों तक संरक्षित रखने का कार्य करती है। जैसे लोक कला का भारत में विवाह समारोहों, सांस्कृतिक रीति–रिवाजों और धार्मिक कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हालांकि आज लोक कला के कलाकार वैश्वीकरण पर आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक स्तर पर कार्य करते हुए एकीकरण और परंपराओं पर निर्भर है। परंतु शहरीकरण की प्रक्रिया ने लोक कला की इन पारंपरिक कला रूपों को चुनौती दी है। इन परिवर्तनों के बीच, सोशल मीडिया ने एक नया मोड़ लिया है, जो लोक कलाओं के लिए नए अवसर और संभावनाएं उत्पन्न कर रहा है। जिससे आज लोक कलाकार अपने किए कार्य को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के जरिए दुनिया भर में एक नई पहचान दिला रहे है। जिसमें फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, और टिकटॉक ने लोक कलाकारों को अपनी कला को वैश्विक दर्शकों के सामने पेश करने का अवसर प्रदान किया है। इन डिजिटल मंचों ने न केवल लोक कला की पहुंच बढ़ाई बल्कि एक नई पहचान के साथ लोक कला को विकसित भी किया है। आज लोक कलाकारों को एक स्वतंत्र मंच भी मिला है, जिसके जरिए लोक कलाकार धार्मिक चित्रों के साथ–साथ समाज में व्याप्त कूरीतियों को भी प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहे हैं।

सोशल मीडिया के उदय से पहले, लोक कला के कलाकारों को कई **चुनौतियों** का सामना करना पड़ता था, जिसमें सबसे बड़ी चुनौती **सीमित दर्शकों** का होना था। क्योंकि उनका दर्शक वर्ग मुख्यतः स्थानीय समुदाय तक ही सीमित थे अधिकांश लोक चित्र कलाकार अपनी लोक कला कार्य को गाँव और कसबे तक ही सीमित व प्रदर्शित कर पाते थे। इसके अलावा, इन कलाकारों को अपने कार्यों को संरक्षित करने के लिए पर्याप्त संसाधन और प्लेटफार्म नहीं मिलते थे। इस प्रकार लोक कला का संरक्षण करना बढ़ा कठिन बन गया था। अतः लोक कला पारंपरिक और अनौपचारिक रूप से सृजित होती थी, इसलिए कलाकारों

को अपने कार्य के लिए उपयुक्त वित्तीय समर्थन और पुरस्कारों का अभाव था। इसके परिणामस्वरूप, कई लोक कलाकारों को अपनी कला छोड़ने या इसे केवल सीमित स्तर पर पेश करने के लिए मजबूर होना पड़ता था।

परंतु आज सोशल मीडिया ने संस्कृति को लोकतांत्रिक बनाने में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। पहले, सांस्कृतिक आदान–प्रदान मुख्य रूप से कुछ विशेष माध्यमों जैसे टेलीविजन, रेडियो, या प्रिंट मीडिया तक ही सीमित था। अब, सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को सहज और खुला बना दिया है। कलाकारों और सांस्कृतिक व्यक्तित्वों को अपनी कला दिखाने के लिए बड़े मीडिया नेटवर्क या गैलरी की आवश्यकता नहीं है वे अब अपने काम को अपनी सोशल मीडिया प्रोफाइल पर सीधे अपलोड कर सकते हैं, और यह सारा कंटेंट बिना किसी मीडिया हस्तक्षेप के सीधे दर्शकों तक पहुँचता है। यह न केवल कलाकारों के लिए एक अवसर है, बल्कि यह दर्शकों के लिए भी संस्कृति को अधिक सुलभ और विविध बना रहा है। अर्थात आज कला विद्यार्थी स्वयं लोक कलाकारों से संपर्क कर सकते है। जैसे– साक्षात्कार, लोक कला अवलोकन, वीडियो कॉल आदि। उदाहरण के लिए पंकज उदास, एक भारतीय लोक कला संगीत और गजल के प्रसिद्ध गायक है, उन्होंने यूट्यूब और इंस्टाग्राम पर अपनी गायन प्रस्तुतियाँ साझा की हैं, जिससे उन्हें न केवल भारतीय दर्शकों में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी व्यापक पहचान मिली। उनके द्वारा गाए गए पारंपरिक लोक गीतों और गजलों को लाखों लोगों ने देखा और सराहा।

यूट्यूब पर उनके चैनल पर लगातार बढ़ते सब्सक्राइबर्स और व्यूज यह साबित करते हैं कि कैसे सोशल मीडिया के माध्यम से एक लोक कलाकार अपनी कला को दुनिया भर में प्रस्तुत कर सकता है। दूसरी तरफ, दक्षिण भारत के प्रसिद्ध नृत्य कलाकार, चंद्रिका ने अपने पारंपरिक कथक नृत्य को इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर विश्व भर के दर्शकों तक पहुँचाया। उनके छोटे–छोटे वीडियो के जरिए भारतीय लोक नृत्य रूपों को वैश्विक स्तर पर महत्व मिल रहा है। इस तरह, सोशल मीडिया ने उन्हें अपने नृत्य को दुनिया भर में फैलाने का अवसर दिया है। राधा सोनी, एक प्रसिद्ध कांची कला शिल्पकार, ने इंस्टाग्राम पर अपने हस्त निर्मित शिल्पों की तस्वीरें साझा करना शुरू किया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें न केवल भारत, बल्कि विदेशों से भी ग्राहकों का समर्थन मिला। इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म ने शिल्पकारों को एक प्रत्यक्ष बाजार प्रदान किया है, जिससे वे अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित कर रहे हैं और सीधे ग्राहकों से संपर्क बना रहे हैं। यह न केवल कला के प्रचार के लिए सहायक है, बल्कि कलाकारों को आर्थिक लाभ भी प्रदान कर रहा है।

सोशल मीडिया ने लोक कला को लोकतांत्रिक और सुलभ बनाया है, जिससे यह और भी प्रभावी तरीके से सामाजिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का हिस्सा बन गया है। सोशल मीडिया ने लोक कला के प्रचार और प्रसार के लिए कई नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ ही कुछ गंभीर चुनौतियाँ और जोखिम भी जुड़े हुए हैं। एक ओर जहां यह लोक कलाकारों को वैश्विक पहचान दिला रहा है, वहीं दूसरी ओर इसे व्यावसायीकरण, सांस्कृतिक प्रामाणिकता के संकट, और पारंपरिक विधाओं के संरक्षण की समस्याओं से जूझना पड़ता है।

व्यवसायीकरण और सांस्कृतिक क्षेत्र में

सोशल मीडिया पर कलाकारों के लिए एक बड़ा दबाव यह होता है कि उन्हें बड़े पैमाने पर दर्शकों को आकर्षित करने के लिए अपनी कला को बदलने या उसे तात्कालिक लोकप्रिय रुझानों के अनुसार ढालने की आवश्यकता होती है। यह व्यावसायीकरण का एक प्रमुख पहलू है, जहां लोक कलाकार अपने काम को अपने सांस्कृतिक संदर्भ से हटकर, केवल व्यावसायिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का दबाव महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, पारंपरिक लोक संगीतकार और नर्तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अधिक लाइक्स और व्यूज पाने के लिए अपनी कला को और अधिक मनोरंजक, ''फैशनेबल'' और आकर्षक बनाने के लिए प्रेरित होते हैं, जो मूल कला रूपों की सांस्कृतिक प्रामाणिकता को खतरे में डाल सकता है। इसके परिणामस्वरूप, जो लोक कला पीढ़ियों से सांस्कृतिक पहचान और परंपरा का हिस्सा रही है, वह सांस्कृतिक प्रामाणिकता का नुकसान उठाती है, क्योंकि इसे बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना पड़ता है।

कई बार, कलाकारों को अपनी कला को ज्यादा वाणिज्यिक और आकर्षक बनाने के लिए दबाव डाला जाता है, जिससे वह अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक विशेषताओं से समझौता कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, पारंपरिक लोक संगीत या नृत्य को सोशल मीडिया पर वायरल बनने के लिए उसे म्यूजिक ट्रेंड्स और पॉप कल्चर के अनुरूप ढाला जाता है, जिससे उसकी सांस्कृतिक पहचान प्रभावित होती है। इसके नैतिक निहितार्थ भी हैं। जब लोक कलाकार अपनी कला को व्यवसायीकरण के लिए प्रस्तुत करते हैं, तो यह सवाल उठता है कि क्या वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को मुनाफे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, या क्या वे इस कला को एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। कुल मिलाकर, सोशल मीडिया लोक कलाकारों के लिए व्यवसायीकरण का एक शक्तिशाली साधन बन गया है, लेकिन इसे संतुलित रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए, ताकि कला की सांस्कृतिक प्रामाणिकता और नैतिकता का सम्मान बनाए रखा जा सके।

परंपरा और वायरल रुझानों के बीच तनाव

सोशल मीडिया की वायरल प्रवृत्तियों और पारंपरिक कलाओं के बीच एक स्पष्ट तनाव है। अक्सर हम देखते हैं कि लोक कला के पारंपरिक रूपों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर लोकप्रिय होने के लिए संशोधित या विकृत किया जाता है, ताकि वे वायरल रुझानों में फिट हो सकें। उदाहरण के लिए, लोक नृत्य या संगीत की पारंपरिक प्रस्तुति को एक छोटे, आकर्षक और म्यूजिकल वीडियो के रूप में बदल दिया जाता है, ताकि उसे अधिक से अधिक लोग देख सकें। इस तरह के संकलन में कला के मूल उद्देश्य और गहरे सांस्कृतिक अर्थ खो सकते हैं, क्योंकि ये केवल दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डिजाइन किए जाते हैं।

सांस्कृतिक विनियोग और शोषण

सोशल मीडिया के माध्यम से लोक कला को सांस्कृतिक विनियोग का भी सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, किसी बड़े ब्रांड द्वारा लोक कलाकारों या उनके समुदायों को सही श्रेय दिए बिना, लोक कला के तत्वों का उपयोग किया जाता है, इससे न केवल कलाकारों की मेहनत का शोषण होता है, बल्कि यह उनके सांस्कृतिक धरोहर का भी हनन करता है। इसके अतिरिक्त, इंफ्लूएंसर अक्सर लोक कला का उपयोग इसके सांस्कृतिक महत्व को बिना समझे, और केवल ट्रेंड या सोशल मीडिया की आकर्षकता को ध्यान में

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

रखते हुए इसे उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करते हैं। इससे कला के प्रति उपयोगकर्ता की समझ और सम्मान में कमी आती है, और यह संस्कृति की वास्तविकता को नकारता है।

संरक्षण चुनौतियाँ

सोशल मीडिया के प्रभाव ने पारंपरिक कला रूपों को चुनौती दी है, क्योंकि अब लोक कला को एक डिजिटल सौंदर्यशास्त्र के अनुरूप ढाला जा रहा है। पारंपरिक तरीके जैसे हस्तशिल्प, लोक नृत्य, और संगीत अक्सर डिजिटल रूपांतरण से प्रभावित हो जाते हैं, जहाँ वास्तविक कला रूप को सोशल मीडिया के आकार में प्रस्तुत करने के लिए उसे बदल दिया जाता है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक चित्रकला को डिजिटल चित्रों में रूपांतरित किया जाता है या लोक नृत्य को छोटे वीडियो के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे पारंपरिक कला रूपों के संरक्षण में दिक्कतें आ सकती हैं, क्योंकि ये मूल रूप से स्थानीय संदर्भ और समाज के बीच संबंध से जुड़े होते हैं। इसी तरह, सोशल मीडिया पर वीडियो आधारित सामग्री या छोटे क्लिप्स की लोकप्रियता ने कला के गहरे सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को छिपा दिया है। यह एक सतही अनुभव उत्पन्न करता है, जो कि इन कला रूपों के गहरे इतिहास, संदेश और उद्देश्य को नकारता है।

क्रॉस–कल्चरल सहयोगः पश्चिम और भारतीय लोक कला का संगम

सोशल मीडिया ने लोक कला के क्षेत्रों में क्रॉस–कल्चरल सहयोग को भी बढ़ावा दिया है। उदाहरण के लिए, भारतीय लोक नृत्य और संगीत ने पश्चिमी देशों में अपनी पहचान बनाई है, और कई पश्चिमी कलाकारों ने भारतीय लोक कला रूपों को अपनी रचनाओं में मिश्रित किया है। यूट्यूब पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के संयोजन में विभिन्न वीडियो देखने को मिलते हैं, जहां कलाकार दोनों संस्कृतियों का संगम प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, सोशल मीडिया ने संस्कृतियों के बीच सहयोग को सरल और प्रभावी बना दिया है, जिससे लोक कला का वैश्विक प्रसार हुआ है।

वायरल अभियानों का प्रभाव

सोशल मीडिया पर विभिन्न वायरल अभियानों ने लोक कला को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में मदद की है। उदाहरण के तौर पर, #FolkArtChallenge अभियान, जिसे कई लोक कलाकारों ने शुरू किया था, ने विभिन्न पारंपरिक कला रूपों को आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया। इस अभियान में, कलाकारों ने अपनी पारंपरिक कला को आधुनिक ट्विस्ट के साथ प्रस्तुत किया, जिसे सोशल मीडिया पर लाखों व्यूज मिले। इस प्रकार के अभियानों ने लोक कला को न केवल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि उसे युवा पीढ़ी के बीच भी लोकप्रिय बनाया। सोशल मीडिया केवल एक दस्तावेजीकरण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक शैक्षिक साधन के रूप में भी कार्य करता है। प्लेटफार्म पर विभिन्न कलाकार और सांस्कृतिक समूह अपने कला रूपों के बारे में जानकारी साझा करते हैं, जिससे युवा पीढ़ी को पारंपरिक कला और संस्कृति के बारे में जागरूक किया जाता है। सोशल मीडिया के माध्यम से, कलाकार अपने काम के साथ–साथ उनके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ को भी साझा करते हैं, जिससे दर्शक अधिक गहरे तरीके से इन कला रूपों को समझ पाते हैं। यूट्यूब पर कई चैनल हैं जो पारंपरिक लोक कला रूपों का प्रचार करते हैं और युवा कलाकारों को इन कलाओं को सिखाने का कार्य करते हैं। सोशल मीडिया के

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

माध्यम से व्यावसायीकरण के विपक्ष में यह तर्क है कि इससे कला की प्रामाणिकता पर असर पड़ सकता है। डिजिटल उपकरणों और सोशल मीडिया का इस्तेमाल पारंपरिक कलाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इंटरनेट के माध्यम से, कलाकार अपनी कला को वायरल कर सकते हैं और उसे दस्तावेजीकरण कर सकते हैं, जिससे यह कलाएँ आने वाली पीढ़ियों तक पहुंच सकती हैं। उदाहरण के तौर पर, लोक संगीत, नृत्य, और शिल्प को वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है, जिसे डिजिटल संग्रहालयों और ऑनलाइन आर्काइव्स में रखा जा सकता है। इससे केवल कला का सांस्कृतिक महत्व ही नहीं, बल्कि उसकी आध्यात्मिक और ऐतिहासिक गहराई भी संरक्षित रहती है।

डिजिटल मीडिया ने लोक कला के प्रचार, संरक्षण और प्रचार के लिए नए दरवाजे खोले हैं। यदि इस तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग किया जाए, तो यह भविष्य में लोक कला के संरक्षण और सांस्कृतिक विरासत को जारी रखने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन सकता है। सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू यह हैं कि यह लोक कला के प्रचार, संग्रहण, और वैश्विक स्तर पर प्रसार में सहायक है। सोशल मीडिया ने पारंपरिक कला रूपों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ते हुए उन्हें नए संदर्भों में प्रस्तुत किया है, जिससे युवा पीढ़ी में इन कला रूपों के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ी है। हालाँकि, इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। जैसे कि, सोशल मीडिया के माध्यम से लोक कला के व्यावसायीकरण के कारण कलाकारों को अपने काम को बाजार के अनुरूप ढालने का दबाव महसूस हो सकता है, जिससे कला की प्रामाणिकता और सांस्कृतिक संदर्भ में समझौता हो सकता है। इसके अलावा, वायरल रुझानों के कारण पारंपरिक कलाओं को विकृत करने की संभावना भी पैदा होती है, जिससे कला की सांस्कृतिक धरोहर प्रभावित हो सकती है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण समाज की पहचान और धरोहर का संरक्षण है, और यदि उचित तरीके से प्रबंधित किया जाए, तो सोशल मीडिया इसे सकारात्मक बदलाव और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. 1971, जसलीन धमीजा, भारत की लोक कला और हस्तशिल्प
2. 1974, महेंद्र भानावत, लोक कला मूल्य और संदर्भ
3. 2021, गिरीश शास्त्री, भारतीय लोककला के बदलते आयाम (चुनौतियाँ एवं सम्भावनायें)
4. 2023, विवेकानंद तिवारी, भारतीय कलाः लोक परम्परा एवं संगीत में गंगा का प्रवाह
5. 2024, चितरंजन प्रसाद सिन्हा, भारतीय संस्कृति एवं कला के विभिन्न आयाम
6. https%//www-artsacad-net/the&impact&of&social&media&on&the&arts/